मलिं

ष्ठे ॥ ऋं नमः ॥ दक्षनासापुटे ॥ ॠं नमः ॥ वामनासापुटे ॥ ऌं नमः ॥ दक्ष
कपोले ॥ ॡं नमः ॥ वामकपोले ॥ एं नमः ॥ ऊर्द्धोष्ठे ॥ ऐं नमः ॥ अधो
ष्ठे ॥ ओं नमः ॥ ऊर्द्धदन्ते ॥ औं नमः ॥ अधोदन्ते ॥ अं नमः ॥ ब्रह्मर
न्ध्रे ॥ अः नमः ॥ मुखे ॥ कं नमः ॥ दक्षबाहौ ॥ खं नमः ॥ दक्षकूर्परे
॥ गं नमः ॥ दक्षमणिबन्धे ॥ घं नमः ॥ दक्षकराङ्गुल्यमूले ॥ ङं नमः ॥ द
क्षकराङ्गुल्यग्रे ॥ चं नमः ॥ वामबाहौ ॥ छं नमः ॥ वामकूर्परे ॥
जं नमः ॥ वाममणिबन्धे ॥ झं नमः ॥ वामकराङ्गुलीमूले ॥ ञं नमः ॥
वामकराङ्गुल्यग्रे ॥ टं नमः ॥ दक्षकट्यां ॥ ठं नमः ॥ दक्षजानौ ॥ डं
नमः ॥ दक्षगुल्फे ॥ ढं नमः ॥ दक्षपादाङ्गुलीमूले ॥ णं नमः ॥ दक्ष
पादाङ्गुल्यग्रे ॥ तं नमः ॥ वामकट्यां ॥ थं नमः ॥ वामजानौ ॥ दं नमः

आशा सफू कुथि
ASHA ARCHIVES
1912 I

बामऊ   ऊदय३

॥वामजङ्घे॥ धं नमः॥ वामपादाङ्गुलीमूले॥ नं नमः॥ वामपादाङ्गुल्य
ग्रे॥ पं नमः॥ दक्षपार्श्वे॥ फं नमः॥ वामपार्श्वे॥ बं नमः॥ पृष्ठे
॥ भं नमः॥ नाभौ॥ मं नमः॥ उदरे॥ यं नमः॥ रं नमः॥ दक्षांसे॥ लं
नमः॥ ककुदि॥ वं नमः॥ वामांसे॥ शं नमः॥ हृदयादिदक्षकरा
न्तपर्यन्ते॥ षं नमः॥ हृदयादिकवामकरपर्यन्ते॥ सं नमः॥ हृदयादिद
क्षपादाङ्गुल्यग्रान्ते॥ हं नमः॥ हृदयादिवामपादाङ्गुल्यग्रान्ते॥ ळं न
मः॥ हृदयादिगुह्यान्ते॥ क्षं नमः॥ हृदयादिशिरःपर्यन्ते॥ ॥ इति
मातृकान्यासः॥ ॥ नवासनन्यासः॥ ऐं क्लीं सौः त्रिपुरकुम्भ
कुविवासनाय नमः॥ पादयोः॥ ऐं क्लीं सौः त्रिपुरवश्यविद्यामातृकासना
यनमः॥ जान्वोः॥ ऐं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीविद्यामासनाय नमः

ऊँ श्रीँ सौँ

नि२ ऊँ ऊँ

॥ऊर्वोः॥ ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरवासिनिचक्रासनाय नमः॥ कटिदेशे॥ ह्रैं
ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुरश्रीसर्वमन्त्रासनाय नमः॥ मध्यमे॥ हंसीं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुर
मालिनीसाध्यसिद्धासनाय नमः॥ लिङ्गे॥ इति नवासनन्यासः
॥ ॥ पृथ्व्यादिन्यासः॥ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं ५ ब्लूं वशिनीवाग्देवतायै न
मः॥ शिरसि॥ ऐं ह्रीं श्रीं कं ५ क्लूं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः॥ नासि
कायां॥ ऐं ह्रीं श्रीं चं ५ न्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः॥ ललाटे॥ ऐं
ह्रीं श्रीं टं ५ य्लूं विमलावाग्देवतायै नमः॥ कण्ठे॥ ऐं ह्रीं श्रीं तं ५ ज्म्रीं
अरुणावाग्देवतायै नमः॥ हृदये॥ ऐं ह्रीं श्रीं पं ५ ह्स्ल्व्यूं जयिनीवा
ग्देवतायै नमः॥ नाभौ॥ ऐं ह्रीं श्रीं यं ५ झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै
नमः॥ लिङ्गे॥ ऐं ह्रीं श्रीं लं ५ क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः

॥मूलाधार॥ कुलिवलिन्यास ४॥ ॥ अथचक्र ४ यो० न्यास ४॥ त्रिं क्लीं सौः ४ क्लीं
ह्रीं अनि चक्र कामगिरिस्थलिङ्ग मत्र श्रीगानन्दनाथ शिवकामशक्तिनाथ
वीतृ जालम गक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ४॥ मूलाधार ॥ त्रिं क्लीं सौः ४
ह्रीं क्लीं सूर्यचक्र जालान्ध्र नयो० प्रञ्च श्रीगानन्दनाथ मर्क वैज्ञ नाथ
वीतृ त्म गक्ति श्रीपादुकां पूजयामिनमः ४॥ हृदि॥ त्रिं क्लीं सौः ४
ह्रीं क्लीं सौः सोमचक्र पूर्णगिरि मरुकनद श्रीगानन्दनाथ शिवकार
गमा लिनीदेवी ब्रह्मलिङ्ग शक्ति श्रीपादुकां पूजयामिनमः ४॥ ललाट
॥ त्रिं क्लीं सौः ४ क्लीं ह्रीं ह्रीं ब्रह्मचक्र उड्डीयानपी० वद्ध्यानन्दनाथ
शिवकश्रीमह त्रिपुरसुन्दरीदेवी परब्रह्म शक्ति श्रीपा
दुकां पूजयामि नमः ४॥ ब्रह्मरन्ध्रे॥ कुलिवलिं ४ यो० न्या

स ४॥ ॥त्रिं क्लीं आत्मतत्त्वायनमः ४॥ पनमः॥ क्लीं ह्रीं विद्यातत्त्वायनमः ४॥
हृदय॥ सौः ४ ह्रीं शिवतत्त्वायनमः ४॥ ललाट॥ त्रिं क्लीं सौः ४ क्लीं
ह्रीं ह्रीं सर्वतत्त्वायनमः ४॥ [illegible] तत्त्वन्यास ४॥ ॥
थत व्यापक न्यास॥ ॥मूलमन्त्र [illegible] व्यापक न्या
स ४॥ मूलमन्त्र प्राणायाम मन्त्राय [illegible] ॥ ॥ थत आत्म
पूजाय॥ थव हृदयकमलम [illegible] ध्यान [illegible]
[illegible] ॥ थत पी० पूजा॥ ॐ मण्डूकायनम
४॥ ॐ कालाग्निरुद्रायनमः ४॥ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः ४॥ ॐ कूर्माय
नमः ४॥ ॐ अनन्तायनमः ४॥ ॐ वराहायनमः ४॥ ॐ पृथिव्यै नमः ४॥ ॐ सुधा
र्णवनमः ४॥ ॐ रत्नद्वीपायनमः ४॥ ॐ सुवर्णशैलायनमः ४॥ ॐ नन्दन
थनमस्तु मूलपन ६

श्रीनमः ॥ ॐ नन्दनाख्यानाय नमः ॥ ॐ नानावृक्षमहाख्यानाय नमः ॥
ॐ धर्म्मायि नमः ॥ ॐ ज्ञानाय नमः ॥ ॐ वैराग्याय नमः ॥ ॐ ऐश्वर्य्या
य नमः ॥ दिक् ॥ ॥ ॐ अधर्म्मायि नमः ॥ ॐ अ[illegible]नाय नमः ॥ ॐ अवै
राग्याय नमः ॥ ॐ अनैश्वर्य्यायि नमः ॥ विदिक् ॥ ॥ ॐ सर्वं न[illegible]
[illegible]नाय नमः ॥ ॐ आनन्दकन्दाय नमः ॥ ॐ हे[illegible]नालाय नमः ॥
ॐ प्रकृतिमयपत्रायै नमः ॥ ॐ विकारमयकेशरेभ्यो नमः ॥ ॐ प
ञ्चाशद्वर्णबीजाढ्यतत्त्वरूपकर्णिकायै नमः ॥ ॥ ॐ अं सूर्य्यमण्डलाय
नमः ॥ ॐ पूर्णेन्दुमि[illegible]पीभय नमः ॥ ॐ कामिगाय नमः ॥ ॐ ब्रह्म[illegible] नम
ः ॥ चूडाय नमः ॥ ॐ [illegible]श्वराय नमः ॥ ह्रीं सदाशिवमहाप्रेतासना
य नमः ॥ ॥ तदुपरि न्यासक्रमेण मूलमन्त्रेण पूजयेत् ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ॥

ॐ २

त्रिपुरायै अमृतार्णवासनाय नमः ॥ ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेश्वर्यै पोताम्बुजास
नाय नमनमः ॥ ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दर्यै आत्मासनाय नमः ॥
ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरवासिनी चक्रासनाय नमः ॥ ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुराश्रीम
द्विमहासनाय नमः ॥ ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनी साध्य
सिद्धासनाय नमः ॥ ॐ यु[illegible]न मूलिकायै नमः ॥ ह्रीं श्रीं सौः ॥ कामिनी
लकामभवचोयवयद्यामूर्त्तिसकल्पनायाकावमत[illegible]न्यासयाय ॥
धनद्रव्यणाधनयाय ॥ थवरववस त्रिकोणचाकयकचायथनपूजा
याय ॥ सामान्यार्घ्य यालखनव याय ॥ ह्रीं अ धनगक्षादिरया नमः ॥ थ
नपूजायाय ॥ मण्डलसलावनयाय ॥ थपूजायाय ॥ मविन्द्रि मण्डलाय धू
म्राक्षिनादिदशकलाख्याकात्मने नमः ॥ रूपधकपायमनालमवमनाथ

पूजायाय ॥ ॐ सूर्यमण्डलायमचिन्त्यादिद्वादशकलात्मने नमः ॥ व
नेक चन्दन मो लस्वानन पूजायाय ॥ मूलमन्त्र पनपाद ॥ मूलमन्त्र जन
पावनी थजिलन थन ॥ थन पूजायाय ॥ ॐ सोममण्डलाय षोडशक
लात्मने नमः ॥ थन पूजायाका व पञ्चमुद्रान नमस्कार याय ॥
[illegible] नमः ॥ धालाकाल वंश मलय नकाव नयाव नमस्कार याय ॥ थ्या
नाम यतु नयमुद्रा ॥ [illegible] नमः ॥ पूजा अञ्जलि याव नमस्कार याय ॥ क्री
नमः ॥ [illegible] ॥ ब्लूं नमः ॥ मूलविद्या [illegible] थ [illegible]
॥ स नमः ॥ यानिमुद्रा नजा [illegible] ॥ [illegible] पञ्चमुद्रा ॥ नमः कुम्भ
समीप स [illegible] कालचाक य कन क चन्दन सिन्दूर व ल ॥ थ पूजायाय ॥
[illegible] धीम [illegible] नमः ॥ थन पूजायाका व धमण्डल सनयाव पश्री

कवचयाय ॥ [illegible] धकी कुण्ड नदाय कुम्भ ॥ ॐ [illegible] ॥ मूलनम
य ॥ नमः [illegible] याय ॥ मूलमन्त्र [illegible] पाव [illegible] काय [illegible] ॥
[illegible] पञ्चकवन ॥ ॐ धर्क धम [illegible] कुम्भ सस्थान [illegible] ॥ म [illegible] त्रिका
[illegible] याय [illegible] याय ॥ कुम्भ सस्थान [illegible] न ह्रौं ह्रौं नमः ॥ [illegible]
व पूजायाका व [illegible] धनयाय ॥ ॥ [illegible] विग्रह
[illegible] धीमहि । तन्नो [illegible] प्रचोदयात् ॥ ध्यान [illegible] ॥ ॥
ॐ वां वीं वूं वैं वौं वः [illegible] विमा [illegible] नाय [illegible] नमः ॥ [illegible] मन्त्र
ध्यान १० ॥ क्रीं [illegible] क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः [illegible] विमा [illegible] स्वाहा
[illegible] वय स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ लां लीं लूं लैं लौं लः [illegible] विमा [illegible]
नाय [illegible] नमः ॥ १० ध्यान ॥ ॐ [illegible] भवय [illegible] नमः [illegible]

मर्यंधुरवीकवाङ्कवींव्रक्कुरूत्यपि ननना।गयामृहं॥ सूर्य्यमण्डलमी
सूर्तावनूणात्यमं द्धिर्ता।अमावीजमध्यदविनुक्रुणी पाद्धिमृच्य
तां॥ दिवानप्रिणवावीजवक्कानन्दमर्यंयदि तिनमरध्यनमोयवि
वृष्कुरूत्यादिवाहतिं॥ क्रीं ग्रीं क्लुं क्लुं कुं ब्लूं वीकाकावीमि लोहितिनि
दिकावानघ्रड्वास्यहनहनस्वाहा ॥३॥ ॐ ग्रीं नवं अमृतेअमृता
र्णववअमृतवर्षिणि महाप्रकाशयुक स्वाहा॥३॥ ततामूलाधारेस
चान्दकुण्डलिनीसुषुनानाडीवर्णहंसश्चभाहं धमन्त्रेणथगींयडावथव
भाउसचान्द्रसहस्रदलकमलस्यामृतिमचान्द्रमदाशिववसामनस्यरा
वनायाडावडायनिसकनअमृतकाउयन्नकुवगवयथअमृतनकुण्ड
लिनीं पवनिवर्मयवनर्ष्यायाडावथअमृतेनक्लासयावेणपिकाय।

वकुम्भसमपञ्चसचान्द्रश्चसकुलदिअमृतमयकानयं॥ ततोवनुण
मन्त्रेणजयचपावलोधनयाय॥ ॐ वां वीं वूं वैं वौं वः वनूणाय नमः४॥
धावु७॥ मूलमन्त्रेण धान ७जयचय॥ पञ्च ०३ देवताः अमृतदेव
नायाय॥ ध्येनपुष्पाञ्जलियायेउ॥ वतलावनपूजायाय॥ क्षिति
उद्युलोधनं॥ ॥ जुधयंशुद्धिमीनमुद्राकृत्वामितलोधनयाय॥ रिठ
धर्मार्तरवनहाय॥ यं १० वायुवीजनदाव लोधनयायके॥ रं १० वह्नि
वीजनदाम कस्मयाय॥ वं १० वनूणवीजनदावअमृतगत सिञ्चनादि
॥ धेनुमुद्राकेन॥ मूलमन्त्रेण लीरवनहाया॥ लोधनयाय॥ ॐ युत
द्विमृत्केवनवायुलि॥ क्लानिशुद्धिलोधनं॥ ॥ मूलमन्त्रेण लीरवनहा
या॥ जयचय॥ ॐ त्र्यम्बकंयजामहे॥ क्लनिमीनशुद्धि४॥ ॥ मूलल्ने

३ ग्रासियनु

खनहाय ॥ जपवय ॥ ॐ नह्रिं ब्रासु विपन्नहा ॥ थ्वनिमूलालं धर्न ॥ ॥
मूललखनहाय ॥ जपवय ॥ ॐ विक्क्वा निकत्प्ययच्छेत्सानूयालिपि
सनुंपूजायनिद्वलिला गर्क्क दधक्षतगग कुं धक्कि सिनी वाली गर्कुं ल्बेरिम
वच्चनी नक्किनिकजूसिनी दवावाधर्कापुंस्क नमजो ॥ ॐ लूं लुं लुं लुं स्वा
हाजूमनजूमनाव्कवजूमनवर्षिलिजूमगंगेजावय २
स्वाहा ॥ थ्वनिकूलामनन्तुह्निपे ॥ ॥ लखनहाजावसकलपदार्थसंमू
लमकुणधावउ जपवय ॥ थ्वनिपञ्चमकावनुह्नि ४ ॥ ॥ अथविले
माघस्क्वापूनमाय ॥ थमदवकाय्याजुकालमत्रिकाणवाकंपककथाय ॥
जंकावगक्कलत्रिकावयाव धूस ॥ मामोन्याचंवालखनहाय ॥ थ्वपूजा
याय ॥ यूं यूं कुं लोनायनम ४ ॥ उउभ्रीमानायनम ४ ॥ जांजाजा ध्वंवायन

मक्कानउ

४४४४

म ४ ॥ कांकाकामनूपायनम ४ ॥ थ्वनिपूर्वादिकथनपकमपूजायाय ॥ मजुल
बद्धावस ॥ मूलमन्त्रलत्रिकाणयारावका गस्युं ॥ पूजायाय ॥ ह्रांजु धाबग
क्ष्यादिराज्यनम ४ ॥ दधूस ॥ ॥ नम ४ धकंमं छिलखनमलावमजुलसत
॥ [illegible] ॥ त्रिंक्लींसो ४ ग्लौंमहात्रिपुरसुन्दरीदेवाविलाषाधापाधिनिस्थाय
यामिनम ४ ॥ मञ्जमजुत्रियादशकलानपूजायाय ॥ यंधूमाछ्वीभन
म ४ ॥ नुडुभाय्यनम ४ ॥ लंहालिन्येनम ४ ॥ वंह्रालिन्येनम ४ ॥ गंविस्फु
लिंगिन्येनम ४ ॥ मंसुश्रियेनम ४ ॥ संस्वनूपायनम ४ ॥ हंकव्यवहाय्यै
नम ४ ॥ क्षंकव्यवहायिनम ४ ॥ मंविक्लिमजुलायधूम्राछ्विनादिदशक
लाव्यापकालनजूर्धपाणसनायनम ४ ॥ ॥ मञ्जमयञ्जुपायद्धवय्या
थ्व ॥ ॥ नम ४ धकं मासमलावयाजजुधावसत ॥ त्रिंक्लींसो ४ ग्लौंमहा

१६ंकलाय्यैनम ४ ॥ ५
पि

पियूषमून्नवीदश्यादि गंधार्घ पूजयामि नमः ॥ अथ अमृतपूर्यादाकल
कलापूजा ॥ कं अमृतचिन्द्रे नमः ॥ खं विमानाचिन्द्रे नमः ॥ गं धमषि नमः ॥ घं
धर्मर्वाञ्जने नमः ॥ ङं नन्दालिन्द्रे नमः ॥ चं धंवव्रञ्जने नमः ॥ छं दमषुमाय
नमः ॥ जं थुलागदायै नमः ॥ झं नत्रिञ्मयै नमः ॥ ञं नवाधिन्ने नम
ः ॥ टं धाविलये नमः ॥ ठं क्रमायै नमः ॥ अमृतयमिन्दुकलाय नयिन्द्रा
दिदावकुकला। प्याफासनविलासार्घपात्राय नमः ॥ अमृतमपूजा ॥
पाश्यार्घधूपवकचन्दननैवे काचनकु त्रिकोणचाकवषि नेपकश्चा
य ॥ अथ पात्र सकलथनयामि सकलाश्रीय ॥ वं ह्रीं सोः ॥ महात्रियु
नसून्नवीदश्यादि विषार्घपात्र पूजयामि ॥ अग्निकला ॥ वं वन्नूनमे
न्रमूलमक विलासनमानकां पवर्प धप सवीन्ना धपात्रसमन्य

पाश्याय्वीधनञ्जूवामजायकौ ध्येनञ्जुद्धिमीनमूडाकुलामिनयुष
पुषमणि ॥ ध्येनवन्द्रयामाजगकला पूजायाच ॥ अं अमृताये नमः ॥
आमानन्दाये नमः ॥ इं पूषाये नमः ॥ ईं तुष्ट्यै नमः ॥ उं पुष्ट्यै नमः ॥
ऊं रत्यै नमः ॥ ऋं धृत्यै नमः ॥ ॠं शशिन्यै नमः ॥ ऌं चन्द्रिका यै नमः
॥ ॡं कान्त्यै नमः ॥ एं ज्योत्स्नायै नमः ॥ ऐं श्रियायै नमः ॥ ओं प्रीत्यै नमः ॥
औं अङ्गदायै नमः ॥ अं पूर्णायै नमः ॥ अः पूर्णामृतायै नमः ॥ उं सोम
मण्डलाय अमृतादि षोडशकलात्मने विशेषार्घपात्रामृता
ये नमः ॥ उं वलवयपञ्चाशत्कलात्मने नमः ॥ हं गगनवर्तिन्यै नम
ः ॥ हं स्वर्गवर्तिन्यै नमः ॥ यं पातालवर्तिन्यै नमः ॥ हं मर्त्यवर्
तिन्यै नमः ॥ हं नागवर्तिन्यै नमः ॥ ॥ त्रिकालत्रिकाल नया ॥

दथुसहंसः ॥ ॐ ह्रीं [illegible] वायधूयाद धूः [illegible] दवनायाध्यानयाडावयावा
हनादिमुद्राकेन तालत्रयदिग्बन्धनयाय धू अवगुण्ठनयाय वैध
नुमुद्राकेन स्वकल्याकमुद्राकेन [illegible] ध्यानसमर्पयवायधूद
थुसवनुर नपूजायाय ॥ योनिमुद्रा धेनुयोनिमुद्राकेन मत्स्यमुद्रा
नेवाकपूर्यमूलमन्त्रलक्षावट जपयथदवनासनयावसमर्पयधूयाधू
पदीपन श्रीपात्रपूजायायपूजा [illegible] लियाय श्रीपात्रयाजुमन
नथम पूजासामग्रीहायरत्नकलशावाथूम मयगावय ॥ [illegible] श्रीपात्र
स्थापनं ॥ ॥ [illegible] स्थापनं ॥ त्रिकोणवाकथजवाय ॥ सामान्या
र्घ्यार्थिसनकायथमण्डलम ॥ पूजायाय ॥ ॐ आधारशक्त्यादिभ्यो नम
ः ॥ मण्डसहितनपात्रसहितनपात्रसलावरुद धर्मे मण्डलसंग ॥ न

मः धर्कीकुमक्षवाक्ष उन्मना ॥ ॐ धर्कुगन्धपुष्पाम ॥ अंकुशमुद्रा तीर्थसू
वाहनयाय ॥ ॐ नमिवज्रमुनवम्नि ॥ व धेनुमुद्राकेन ॥ ॐ धावट मत्स्यमु
द्रानताकिपूयावजायनय ॥ [illegible] तिरुनपात्रस्थापनं ॥ ॥ ध्वथेसामपात्रण
क्रियात्रवलिपात्रस्थापनं ॥ ॥ गुरुपात्रयादवयनगुरुनमस्कारनाय ॥ ऐं ह्वां
हां श्रीजुमुखानन्दनाथ पवनमगुरुजुम्मुकादवादवश्माश्रीपादुकां तर्प
यामि नमः ॥ आग्नेयकोणम ॥ ऐं ह्वां हां महावानन्दनाथ पवनायमगुरु
श्रीपादुकां तर्पयामि नमः ॥ नैऋत्यम ॥ ऐं ह्वां हां महादेव्यम्बापरम
गुरु श्रीपादुकां तर्पयामि नमः ॥ वायव्याम ॥ ऐं ह्वां हां पनमगुरु श्री
पादुकां तर्पयामि नमः ॥ मध्यमकोणम ॥ ऐं ह्वां हां दिव्यौघगुरु
पादुकां तर्पयामि नमः ॥ ऐं ह्वां हां मानवौघगुरुपादुकां तर्पया
मि नमः ॥ ऐं ह्वां हां पत्रयकाशानन्दनाथश्रीपादुकां तर्पयामि नमः ॥

(ईशानकोणम)

ऐं स्वाहा हाय नमः शिवानन्दनाथ श्रीपादुकां तर्प्पयामि नमः ४ ॥ ऐं स्वाहा श्रीप
नगणक्षु स्वा श्रीपादुकां तर्प्पयामि नमः ४ ॥ ऐं स्वाहा श्रीकुलेशानन्दनाथ
श्रीपादुकां तर्प्पयामि नमः ४ ॥ ऐं स्वाहा श्रीकामेश्वर्य्य स्वा श्रीपादुकां त
र्प्पयामि नमः ४ ॥ ऐं गणदिव्यौघान् तर्प्पयामि नमः ४ ॥ ॥ [illegible]
[illegible] याय ॥ वां स्वाहा बटुकनाथ श्रीपादुकां तर्प्पयामि नमः ४ ॥ [illegible]
म ॥ क्षां स्वाहा क्षेत्रपाल श्रीपादुकां तर्प्पयामि नमः ४ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
स्वाहा [illegible] तर्प्पयामि नमः ४ ॥ [illegible] ॥ गं स्वाहा गणपति श्रीपादुकां तर्प्पया
मि नमः ४ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ॐ ह्रीं सर्व [illegible] ४ सर्वभूतेभ्यो
हूं हूं ट स्वाहा सर्वभूत श्रीपादुकां तर्प्पयामि नमः ४ ॥ ॥ [illegible]
[illegible] याय ॥ मूलं स्वाहा श्री महात्रिपुरसु

श्रीपादुकां ४ श्रीपादुकां ४

न्दरी श्री पादुकां तर्प्पयामि नमः ४ ॥ ३ ॥ मूलं स्वाहा मामा [illegible] धर्म्मेवाह
नौ मपविवा [illegible] श्री नवसिद्धिकान्तां श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां त
र्प्पयामि नमः ४ ॥ ३ ॥ ॥ [illegible] याय ॥ [illegible]
[illegible] याय ॥ ॥ श्रीयागपात्र [illegible] त्रिकोणयाय
थ त्रिकोण [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] त्रिकोण [illegible]
[illegible] याय ॥ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं [illegible] धर्म्मा मिस्वा
हा ॥ [illegible] याय ॥ ऐं श्रीं [illegible]
हूं [illegible] धर्म्मा मि स्वाहा ॥ [illegible] याय ॥ ऐं श्रीं [illegible]
[illegible] हूं [illegible] धर्म्मा मि स्वाहा ॥ [illegible] याय ॥ ऐं श्रीं

ॐ क्लीं सौः ४ सर्व्वतत्त्व ननू तुयग्रयजी वं क्रोध यामिल्वा हा ॥ दपुमखाड
खीकावच्याय ॥ ॥ व्याघकं न्यासयाय ॥ पिठाया वलालानमिय ॥ प्रीया
पुष्या विन्दु स्त्रीकावच्याय ॥ ३ ॥ तिमत्त्वछि ४ ॥ ॥ थनवलिदानयाय
॥ ॥ ीनाननु निर्मल विवायु थवरवस पिकाणचाकयकचायाव लि
पात्रयो जूम नानन्दाय ॥ पूजायाय ॥ ॐ ह्रीं हूं मण्डुलायनमः४ ॥ वि
मण्डुलस स्थानकेन्य ॥ ॐ ह्रीं व्यापकमण्डुलाय नमः४ ॥ खवमचाढम
ण्डुलमस्थानकत्तलं ॥ थ लसवलिपात्र य ॥ वलिमपूजायाय
॥ वाँ वटुकनाथाय नमः४ ॥ यो योगिनीस्यानमः४ ॥ क्षौं क्षेत्रपालायन
मः४ ॥ गँ गणपतये नमः४ ॥ ॐ सर्व्वभूतेभ्यो नमः४ ॥ गन्धपुष्पादिन पूजा
याय ॥ वटुकादि वलि विय ॥ ॥ एह्येहि देवीपुत्र वटुकनाथ कपिल

जटाभारभासुर त्रिनेत्रज्वालामुख सर्व्वविघ्नान्नाशय सर्व्वोपचार सहितं व
लिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ एष वलि वटुकाय नमः४ ॥ वामहस्तमुद्रान वलिपात्र
मृगनविय ॥ ब्रुझिकाक्रम ॥ ॥ ॐ ऊर्द्ध्व ब्रह्माण्ड गता वा दिवि गगनेचरा तले वा पाताल
निष्कलवाया तालि वा नरवा मलिनपवनया यस्मि कू ग ब्ध
पया भ दिक्षु चक्र वपदा धूपदीपादिकं नप्रीतादेव्य ४ सदान ४ गुरु
वलिविधिना पालेवा नन्द वन्द्यो ४ ॥ यां योगिनी स्य ४ स्वाहा सर्व्वयोगिनी
हूं फट् स्वाहा एष वलि योगिनीस्यो नमः४ ॥ जवयाया लाहाननमूद्रा
नविय ॥ नर्सक्रम ॥ ॥ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः४ स्थ स्था नक्षेत्रपाल धूपदीपा
दिसहितं वलिं गृह्ण २ स्वाहा एष वलि ४ क्षेत्रपालायनमः४ ॥ देवपाला
हातयाँ तर्ज्जनीमुद्रान विय ॥ वामक्रम ॥ ॥ गां गीं गूं गणपतये वरवर

दसर्वजनमवशमानयबलिंगृह्णु२स्वाहा। एषबलिर्गणपतयनमः॥
दऊँ।थनननिपुनुकावधथूलाजूगुलाय्कालासंकूचेनवलिविय॥ ऊँ
गणानमः॥ ॥ऊँह्रींसर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हूं२स्वाहा। एषबलि
ः सर्वभूतेभ्यो नमः॥ दनयाप्दोलाहानियात्वमूद्राणविय॥ थवरव
दस॥ ॥इतिबलिदानं॥ कावधतन्नयासध्याय॥ कामकलायाध्या
नयासपनेनिवङाकूलुलिनीजाताभनुसलावधत्रिखण्डामुद्रावेन
कावन्दनस्वान्जोकावध्यानयाय॥ ॥ऊँबालार्कमण्डलाभासांचतु
र्बाहुं त्रिलोचनां। नकाम्बनयजाधानसिद्धवन्द्रमकुटोज्वलां॥ पाशभ
कुशानवाणान्धारयन्तीं शिवां भजे॥ ॥थ्वतध्यानयाङावपुष्पाञ्ज
लिसचककावर्णुमान्दकालाचथधनमनसमनथ्याकाथवहन्नासापूरन

कामकलायाकनर्पिकायावयक्रसथ्वपुष्पाञ्जलिरु॥ ऊँमहापद्मव
नान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे। सर्वभूतहितेमातरेह्येहि परमेश्वरि॥ दु
यलिरुकिसूवरायविवावेसमन्वितेः। भावनायापूजयिष्यामि तावत्त्वं
सुस्थिराभव॥ थ्वतानन्दनसकाल॥ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं भगवतित्रिपुरमहात्रिपु
रसुन्दरि इह अवतर २ इहागच्छ २ इह तिष्ठ २ इह सन्निधानं कुरु २ इह
निरुद्धा भव २ अत्र अधिष्ठानं कुरु २ ममपूजांगृहाण॥ आवाहनमुद्रा
नआवाहनयाय॥ ललिहामुद्राणप्राणप्रतिष्ठायाय॥ ॥ऊँआँह्रीं
श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेव्याः ४ प्राणाः ४ इह प्राणाः ४ ऊँआँह्रीं श्रीमहात्रिपु
रसुन्दरीदेव्या जीव इह जीवस्थितः ऊँआँह्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी
देव्याः ४ सर्वेन्द्रियाणि ऊँआँह्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेव्याः वाङ्मनस्य

नत्रीं गुह्य प्राणं प्राणा ॐ हा गत्य सु रवि विन्नं मिक्ष नु स्वाहा ॥३॥ ॐ शिजीव न्या
स४॥ दच्या४ नीचं च ऋतं यामः॥ कुं अवगुण्ठने ॥ वं धेनुमुद्राकेन ॥
रु दृध क्षुद्र दीघस्मालतय चक्षुदिकानं दि व्यं ध्वनमा यया ॥ निमुद्राकेन ॥
नवमुद्राकेन ॥ धमुद्रा ददं य सरखा च समिहा स ललाट मगु मार्ज सुस
स्थानप्रतिकेन ॥ उंकुश पाशवाणचाप मुद्राकेन ॥ ॥ कुं भलवा
र्दिपुरे याय ॥ रुग वितिश्री महात्रिपुरसुन्दरि स्वाग मंकुमे लमिद
मास्थतौ ॥ प्र मस्या कां वतार्थ लियाय ॥ मूलं स्वाहा श्री महात्रिपुरसु
न्दर्य्यामि नमः४॥३॥ ॥ धनञ्जयचानपूजा ॥ ॥ मूलं ऐं नं त्यार्घ श्री
महात्रिपुरसुन्दरी पादे श्री नमः४॥ मूलं स्वाहा आत्मनं त्वाय स्वाहा ऐंषा
र्घ४ श्री महात्रिपुरसुन्दरी पदे श्री स्वाहा ॥ दया हस्त ॥ ॥ मूलं स्वाहा

५ दया४ पाले स २

ॐ दमा च मनीयं श्री महात्रिपुरसुन्दरी पादे श्री स्वधा ॥ ॥ ॥ मधु
पर्कानय ॥ मूलं स्वाहा ऐं ष मधुपर्क४ श्री महात्रिपुरसुन्दरी पादे
श्री स्वधा ॥ ॥ मूलं स्वाहा पुनराचमनीयं श्री महात्रिपुरसुन्दरी पादे
श्री स्वधा ॥ ॥ मूलं स्वाहा ॐ दं स्नानीयं श्री महात्रिपुरसुन्दरी पादे श्री न
मः४॥ मातसान ॥ ॥ मूलं स्वाहा ॐ दं पट्टनकावस्त्रं श्री महात्रिपुरसुन्द
री पादे श्री नमः४॥ वस्त्रं ॥ ॥ मूलं स्वाहा ॐ दं मलंकनुनं श्री महात्रिपु
रसुन्दरी पादे वितिरर्पयामि नमः४॥ सिमान ॥ ॥ मूलं ऐं षगन्धं४ श्री म
हात्रिपुरसुन्दरी पादे श्री नमः४॥ चन्दनय ॥ ॥ मूलं ॐ दमनुलपनं श्री
महात्रिपुरसुन्दरी पादे श्री नमः४॥ ॥ मूलं पुनरं ऐं षगन्धं४ श्री महात्रि
पुरसुन्दरी पादे श्री नमः४॥ ॥ मूलं ॐ दं सिन्दूरं श्री महात्रिपुरसुन्दरी

दश्चौनमः॥ ॥मूलं ॰ दंस्वयंभुपुष्पं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदुश्चौ
नमः॥ ॥मूलं ॰ मत्स्यपुष्पं श्रीमहा श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदश्चौनम
ः॥ ॥॰ षमालाजातिपुष्पं ॥मूलं ॰ षजातिमालापुष्पं नकः ५ष्टयं
मिनमः॥ ॥नानाजातिपुष्पमाला॥मूलं नानाजातिपुष्पमाला श्रीम
हात्रिपुरसुन्दरीदश्चौनमः॥ ॥धूपः॥ सामान्यार्घ्याल्लंखनकायधूप
धात्र दीपपात्र पूजा॥ चलुलंखनका पञ्चगव्य स्नानन पूजायाय॥ ॐ
नजध्वनिमन्त्रमा नः स्वाहा॥ ॥[illegible] धूपदी
पनाय॥मूलं ॰ षधूपः श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदश्चौ निवेदयामि नमः
॥ ॥मूलं ॰ षदीपः श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदश्चौ निवेदयामि नमः॥
नैवेद्यनाय॥ सामान्यार्घ्याल्लंखन [illegible]

आशा सफूकुथि
ASHA ARCHIVES
1912 I
303
Tripurasundari pūjā

स्वाहा ॥ ॥ॐ मामिदीयसकलीपनदवमार्थ्येसमर्प्पयामि ॥ ॥ थनव
स्मार्प्पन याहावचक्र विधियाय ॥ गुरु हृवनदनसा गुनूया मथ
नस्वाननयवनाविअूलदन पूजायाहावगुनूयामगुनूयात्रवि
यगुनूमदनसालखम विसर्ज्जन याय ॥ ॥ थनमं किपूजा
याय ॥ थवखवसामा न्याहृ्यालखन त्रिकाणवाकर्यकया
य थमण्डलस पूजायाय ॥ ह्रीं आं धं चगं क्का दिस्यानमः ॥ थ
म पूजा धूनकाव थ मण्डलयादवुनलासा कुगुलिलाय थन
मंकि स्नापनयाय ॥ ॥ भोसिवक ३ ॥ प्राणायाम कनषडंगन
न्यासयायवक ॥ थन थमन मंकि पूजायाय ॥ सौः मंकि मूल

यपादार्घ्यनमः ॥ पाद्ययावक ॥ सौः मंकि मूर्त्तय हस्तार्घ्य नमः
॥ हस्तार्घ्यनिय ॥ नैवंचन्दन नमः ॥ ह्रीं गुरुकल नमः ॥ ग्री सिन्दूर
नमः ॥ सिं धननर्वक ॥ सौः पुष्प नमः ॥ स्वानकिय ॥ ॥
मंकि माहावनलखन मण्डलथेला ॥ मंकि याक गुजलित
य ॥ तिं धूं मंकि रूपसद्य सिद्धिदाये नमः स्वाहा ॥ ३ ॥ गु
याञ्जलि धूनका वमंकि पात्रकायाव य पवनवाड्ढ ॥ ॥ ॐ
शिववंग कि त्वं त्वमसि समयात्वं समष्ठिनी त्वं मासा त्वं
दीकाभवम यमी द्विगुणगर्भ ॥ अविद्यात्वं विद्यात्वमसि किं
गुरूलीयथक त्वं रगावत्ति विख्यामहे ॥ पात्रविय ॥ साधका
दिपतनसाथनच नस्वान वियाव याग विय ॥ ॥ थवमंथ कास्तान

कायरुग। पात्रकायावनर्ष्यणयाय॥ गुनूगकियाकेजुल्लाकायाव
पात्रवन्दनयाय॥ ॥कूकुलवल्लाय॥ नवचनून वककविधियाय॥
यथाविधिनबाछन॥ ॥वलिविसर्ज्जनयाय॥ पूजाह्वानयाविव
नत्रिकोणवाकयकयायध्ययादवनथालाचूकुलिसकसकल
वलिंथनपानक॥ पूजायाय॥ त्रिंह्रीं गोंड क्लिं हूं रों नवव त्रेक्षे हि
वलिं गृह्न रहूं रुं हूं स्वाहाउ क्लिं हूं रौं नववायनमः॥२॥ ॥वलिवि
सर्ज्जनयायपूजायावगानिसवयनवथन॥ ॥श्रीपात्रयाद्रवुतन
वलियाय॥ मूलंदवमासंमसायुधीसपविवाबासवाहनाविव
वसहितं मथ्यैमिनमः॥ पानउ॥ ॥श्रीपात्रकायावकसवी
कनइकायर्क॥ श्रीपात्रयाद्रवकूउनूनूय॥ मूलंत्रमघपनमूरवा

र्घ्यं स्वाहा॥ ॥पनिवासकलंमूलदवनासकलीनकूवलावय॥ ॥
धनदवनाविसर्ज्जनयाय॥ ॥वाकू॥ ॐ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं
यत्रमन्थवि। यत्रब्रह्मादयोदेवा नविन्दुः परमं पदं॥ ॥धत पत्र
पावनकुसवाद स्वानसंहावमुद्राणस्वानतुहावपनमन्थविवह
नालपूरनयचीदुंहायावकूलुलिनासदिसर्ज्जनयाय॥ ॥नतु
कुलिखानकूनीननसवाय॥ ॥ह्लीं नत्रिकोणवाकयकया
यध्यानमलुलसनय॥ ॥धनपूजायाय॥ ॐ नमः ह्लीं क्लीं हूं वाकुलि
लिमाभैरवविसर्व्ववर्गक विघ्नाहा॥ ह्लीं नमवाउ पूजाया
य॥ ॥श्रीपात्रयाजूमृतनधमहायउ॥ ॥श्रीपात्रकायावकी
कायाय॥ वाकू॥ ॐ इदं पवित्रममृतं पिवामि भवरोगघ्नं पशु(?)पा

णासमुच्चदं काव णरिन वादिमां स्वस्थानस्था विकाणायमुत्नमस्कनया
यणे। तेस्मा दिमासु धैदिवं यूं ज्जु हिका इहामयहं स्वाहा॥ ॥धिन
यनयाव स्रीकानयाय॥ ॥स्रीकानयाकावलं काददमानवंसर्जीका
नयाय धूकादाव धदञ्रणथमनय॥ ॥यंयंयगति पादनयंय
पञ्च मितु दुबा। सदाणनास्समाया मियदिणक्रमभारवत॥ ॥
ञागयाविसर्जनयाय॥ ॥निर्म्माल्यस्वानकाकायाव थमकूय
॥ ॥थवमानसमुनुयादुकाध्यानयाकावलं प्वडमदवीया
ध्यानयाकावयथासूरवनवित्तासनजाय ॥ ॥ॐश्रीश्रीमक
ष्टिपूनमन्यनीयव्या४संकयपूजापद्धि४समाप्त४॥ ॥
सम्वत् ७८२ पौषकृष्ण अमावास्या यक्तियदिणकवानथकू
त्रजि

कसंपूर्ण लिखितं श्री मधुसूदनशर्म्मणभवखनिक्रयादाणद्धन॥
थवनसमश्री श्री निवासमल्लदूदुथेमिमदनविश्वावकथाकून
शंवायायादूवनशर्म॥ ॥

॥अथ बगलामुखी पूजा॥ कुलसोमल्ला ६ पद्धानविधानं लिख्यते॥ मदकीमल्ला मन
व॥ स्वन्दनीयूवनी खगकिंदी कि नाम्बा निग्गा या मानीय॥ समाम्बूल पूज्याप
कानलीकनं यात्राह्निकें दातव्यं॥ कड्डा कथाल कूटलकूवेश निबुद्ध्यान
खातिमके लिखनं नरवे तूनमिऊँ ग्रः क्लीनग्मधनतमः॥ कूद्धिनाशिवनमेनाक
वगः है॥ मानजिनी ललिनाऊँ यष्टु ः यमनुगुतुरु वलनं।रा न्मा न्यः नका
मिन्या अनन्नमक्रीणं॥ ॥मूलपि०९ ध तो मूलिमन्त्रथ ७॥ अं ऐं क्लीं क्लीं ःमा
द्रावयस्वाहा॥ द्रं क्लीं चपलेष पेलविनन्नमारमूर्छम छ स्वाहा॥ ब्लूं क्लीं मी ह्रीं
मूलपी ०लिख ७॥ मूलविद्या लिखि स्वाओमानहेनवखे नूपंधी लामे
थूनरु ताचे। सह्रम कुर्यात् प्रथमं वय ७॥ पूजालजा नेकानय ७॥ मन्त्र
॥ह्रीं ओं मच्छुन्मुक्रस्तम्भकाविलिस्वाहा॥ सूर्याय हनवलायंकानिपुष्प
मूलं ... ॥ अरिमन्त्र १०॥ जूह्ण ग ध्येन मिलि त्वावटिकु कुर्यात्॥ इति

कुलम्बलाकुवाब्रानः॥ ॥अथ नकन्यापूजनपद्धतिलिख्यते॥ पूजां कुर्यात्॥
यथाविहितांगा क्लींवामहमनं धृत्वावामानूपनिर्मलका पुष्प॥ स्वस्त्यादिके विन्य
सेद्यथा॥ अस्य श्रीशाकिपूजनस्य ऋषि विद्विकि निछन्दः शाकिनूपा
श्रीत्रिपुरसुन्दरी देवता॥ क्लीं बीजं स्रीं शक्तिः॥ ऐं कीलकं शिवगकि सामसे
सख्जये विनियोगः॥ ॥नमः॥ अतन्यासः॥ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः॥ स्रीं तर्ज
नीभ्यां नमः॥ स्रूं मध्यमाभ्यां नमः॥ स्रैं अनामिकाभ्यां नमः॥ स्रौं कनिष्ठाभ्यां
नमः॥ स्रः करतलपृष्ठाभ्यां नमः॥ ॥एवं हृदयादिन्यासः॥ मरु कादिवीजं
गयूसमन्क्रवातगमू ह्रि न्यमत॥ क्रीं कौलिन्यै नमः॥ मिप्यमि॥ क्लीं हयमालि
न्यै नमः॥ काम्यानयाः॥ श्रीं नित्यक्लिन्नायै नमः॥ ... ॥ स्रूं भूतनभ्य कुलायै नमः
स्क न्ध्या॥ क्लीं सुमयमालिन्यै नमः॥ वन्दामि॥ ह्रूं मदनोन्मादिन्यै नमः॥
कुलचयाः॥ स्रीं कामावतिन्यै नमः॥ याम्यश्या॥ स्वूं शिवोन्मादिनीन

मः॥ कौ॥ क्लुं मादिन्यै नमः॥ नाले॥ ह्रूं आकर्मिन्यै नमः॥ वरौ॥ श्रौं सम्मोह
नाय्यै नमः॥ वर्कं॥ ह्रूं आनन्दरूपायै नमः॥ कुचा॥ क्षौं हृदय
भ्रमादिन्यै नमः॥ जानौ॥ क्षौं सम कोचिन्यै नमः॥ जंघा॥ क्षौं स
कारिण्यै नमः॥ पादयाः॥ ख्रुं सामसरस्वरूपिण्यै नमः॥ वदन नः॥
नमः॥ सामरस्य न्यास ॥ अथ ... न्यासः॥ क्ली क्ली
म्रीं ग्रीं हूं ह्रौं ...
सकलवह्नि ... दयेद ... ममदृ ... ध्वनुमम
धिनवाचमम ... नव ...
यानिममवाचइमस्त सिद्धिकेना लीलामर्ह निदान

कुर्येवलीस प्रवाहयप्रवाहसेवलीभिवशक्तिसामनस्यमाधनेनदेवीसाध
यावः॥ ॐ ह्रीं स्वाहा॥ नमः शक्ति श्रीनंकुमयाडिथः॥ ॥ॐ धात्रयास्ति ह्रिं शक्ति
जगदवन ... विश्रामराणधानिशक्तिशक्ति इवनिजन
त्रयमाथ शक्ति सावधा। ज्ञानक्रियाकर्मशक्ति त्रिपुर विजयनमर्व गमसर्वशक्तिः
सर्वधामादिशक्तिमर्मिदं दिवमना ... नन्दवासादिशक्तिः॥ नमः शक्तिमा
यदवीमावाहनम्॥ ॐ कुं फ्रों म्रीं क्लीं ... ह्सौं ... हिं हगवतिदक्ष
कापालिनि ... ॐ ... स्मृतान्प्रकटय॥ ... ग्रीं क्रीं क्रीं महात्रिपुर
सुन्दरी शक्तिकलावतानाव शक्तिदयस्वदर्शन शक्तिं ... २ शक्तिं याद्य
२ सामनस्य सिद्धि देहि २ स्वाः ... कूं कुलमर्यादाय प्रतिकानि ... प्रवति
निशक्तिवर्क ... ह्रौं ... ह्रों॥ मानिर्ध्वं कुरु २ म्रीं म्रीं म्रीं हूं हूं
हूं हूं हूं हूं नमः स्वाहा ... हा॥ नमामूलमा ... वीमावाहन्याथो॥ क्रीं

ह्रीं श्रीं हुं श्रीं क्लीं हूं खुं फ्रुं ब्लूं ह्रिं भगवति महात्रिपुरसुन्दरि विग्लकिपी ९ स
निध्यमावहाय त्वा   महवहामि गलकि तृष्णु नुपि निहं अं स्वाहा ॥ ॥ नमः ९ ग
किनुपूर्वा नैः पूजयेत् ॥ गलकि मनन्न्याय था ॥ ओं हुं क्लीं श्रीं गलकाय नमः ॥ ॥ ततम
कुण ॥ ॥ षाष्ठां दिति नैवेद्यान् पूजयेत् ॥ ततः ९ गलकि बांताग्न वर्णा पूजये
त् ॥ श्रीं ललितायै नमः ॥ श्रीं प्रमदा यै नमः ॥ श्रीं वामायै नमः ॥ श्रीं मूदितायै
नमः ॥ श्रीं हर्षितायै नमः ॥ श्रीं माहिन्यै नमः ॥ श्रीं कामदायै नमः ॥ श्रीं रुपाम
लिन्यै नमः ॥ श्रीं डमालिन्यै नमः ॥ श्रीं रत्नायै नमः ॥ श्रीं दर्पितायै नमः ॥ श्रीं व
त्सलायै नमः ॥ श्रीं विकलायै नमः ॥ श्रीं कन्नवत्यै नमः ॥ श्रीं कामकुलायै नमः
॥ श्रीं सर्वसिद्ध्यै नमः ॥ ततः संपूज्य ॥ ततो मूलपी ९ कन्दर्पं दत्वा ॥ गलकि गायत्री
गायत्रीयं ध्यानं वाचवा यद्दूरं विगलति वार्त्ता वाजयेत् ॥ श्रीं भगवत्यै विभ्रमे

श्यानिमालिन्यै श्रीं महि । ततः ९ गलकि ९ पूर्वाद्यूपात ॥ ततः मायायं जपन् ॥ जप
समर्पं मूलमन्त्रं पूजलि वगत अग्रजा यथा गलकि प्राणादिकं याएवाय था विक
वानुसार्थं नगलकि पत्रिता घ्यापर्णं तत्र अत्यदत्वा नदाकं स्माल यमुपिसु हीता नहि
कापूर्वकं कामकालिकूर्या ॥ ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं खुं सौं हूं खं फ्रें क्लीं ९ ह्सौं
९ नानि प्रियायै श्री महात्रिपुरसुन्दर्यै त्रिषष्ठ नवने जे   श्यं श्रीं नमः ॥ ततः
तिलनन्मन्त्रः ९ ॥ ॐ तुं अं क्रां खं क्लीं कं कं कं ॐ दं कामसूरकं त्वमहमथ्य
मामि पवित्र स्वरूं ॐ दं ममसि   हिं ददददद हिरसमाग
नवालिनि कूं रुं रुं नमः ९ स्वाहा ॥ ॐ दं   कूं कूं कामसूरदं श्री महात्रिपु
रसुन्दरी नि वंदयामि ॥ ततः तिलन्नमन्त्रः ९ ॥ ॥ ॥   ऐं क्लीं ह्सौं ९ सौं ९ श्रीम
हात्रिपुरसुन्दर्यै ॐ दं मारुन्न नमः ९ ॥ ततः त्रैलोक्यमन्त्रः ९ ॥   ॥

१ भूपवर्द्धकः॥ पातालमहामण्डूकस्थायपिकालाग्निरुद्रः तस्थायविमहामाया
विंष्ठंविमाहिमा। मायामाक्रम्य विश्राम्कः कूर्म्मरूपोजनार्द्दनः॥ महप्रवना
नकः कूर्म्ममाक्रम्य तिष्ठति। तस्थायविमहाविष्णुर्वराहः पवि कोलिनेश्वविग
म्हनाजम नामायवाराहायविस्मंह्मिना॥

भगव\
ब्रह्मा\
का\
लाभव\
मुद्दविनू\
रवेज\
ह्मोना\
स्वाय\
ॐ नमिव
क्षायनमिव
मालुमि वक्रुमानठवनूया॥

स्वगुरुनाथः पात्रवन्दनं कारयेत॥ श्रीमद्भैरववर्णमवामननवसच्चिद्धामनु
ष्ठानि गंधर्वाधीश्वरयोगिनीजनगणैः सिद्धैः समाराधितं। आनन्दाकु
वर्कमहास्मकमिदं साक्षात्त्रिखण्डामृतं वन्दे श्रीगुरुथमर्कनाम्बुजं नमत्पात्र
विशुद्धिप्रदं॥ हिरण्यपात्रमध्येपूर्णं ददामि मधू श्रामालिने कदाब्रह्म
नृपहरति आयुर्तेजा ददामि विंशति परमानन्देन नवब्रह्मसाधका
नीमायानन्दिनि तेऽसु अहं वर्तसुधा रव॥ इदं पवित्रममृतं पिवामि रुव
रूपकं। पशुपाशसमूहं दकारणं रुवबाधितं॥ विरुः स्वात्मत्रासाम्याच्च
स्यादानन्दमणाव तः। तन्मयलब्धरूपा वा नहि वाचा कविना वर्ण्य। इत्य
नन्त्यावेकागायसत्सवसक्तनवीयते। तस्मादिमां मूर्द्धिदिव्यां पूर्णेन हि नहि
गामरुहं स्वाहा॥ ॥ इति मन्त्रद्वयं पवित्रामूलाधाराद्य आज्ञाका कुण्ड
लिनीं ध्यात्वा गुरुनृपादकां लिवसि ध्यात्वा मूलमन्त्रेण ० नमनः गनः शि
वं॥ ततः गुरुद्वीजिकेशी कुर्यात॥ ॥ ततो वकिः कर्णप्रकाशगुरुनृपा

दुकां स्तुत्वा पूर्ववत्मानसहितमन्यत्पात्रवन्दनं कुर्यात्॥ हेमं मीनं नस्मा
वदेदयिकयादतुं पयादिभिः किं चिश्रुकले नक्तपङ्कजहृग्नस्य
समावदितं। वामशुद्धिविशुद्धि कारणपा लौनि धाया मकी वन्दपा
त्रमहं द्विमीयमधुनानन्दैकसंवर्द्धनं॥ ॥ इति पात्रवन्दनं कला द्व
पवित्रीकुर्यात्॥ ॥ ततो मूजासहितपात्रवन्दनं कुर्यात्॥ सर्वा
म्नायकेलाकलापसहस्रं कौमृहूलोद्यानन्दचन्द्रापन्दमहेन्द्रैः स्तुव
न्तु ब्रह्मादिभिः पूजितं। ध्यानेन्दवगणैः परमुनिगणैर्मैः काथि
ः सर्वदा वन्द्यपात्रमहं ह्मीयमधुना वा त्मा वद्वाधकर्मं॥ ॥ इति पूर्व
वल्लीकला॥ ॥ शुद्धिसहितमन्यत्पात्रवन्दनं कुर्यात्॥ मद्यमीनं नसा
वहेहृदिहनवब्रह्मादिभिः पूजितं मूडामेथुन धर्मकर्मनिरतं ज्ञानाम्नि
काग्रयं। आचार्यादिकसिद्धिहेनवकलामाप्तिनर्तं [illegible] धितं पायात्तं

मकारमात्रसहितं पात्रं चतुर्थं नमः ॥ इति पूर्ववल्लीकल्प ॥ ॥ अथ भ
कुलगणाधिराजवल्लभ पात्रं महीमण्डलमध्यसंस्थ समग्रतावि [illegible] लिङ्गवा
ह्रीं वदिन्द्रकिनः । माहेश्वरीचवमस्त्रियं नृत्यति दिनताराग [illegible] लेन कुकेनादिप्य
प्रभुखः । मूनासुनगले । वाङ्मकन्नः । किंकनेः ॥ इति पूर्ववल्लीकल्प ॥ ॥
अथ द्वयपथ कामपात्रं श्रीककायोतल्लाममययवलि विमर्श अ० ॥ ॥
श्रीकिरणार्पि ५८०७ ॥ यस्याज्ञ न नवि [illegible] पितो किमध्याहलौकिकर्मप्रमि
द्धमिति नाम कुलप्रसूतं । यं सकलसकलसाधकविलवि [illegible] विनाम लि
कूलगणाधिपतिं नमामि ॥ चकाम्बने [illegible] लम [illegible] गजटाकलापं काला
वलीकुटिलचन्द्रधवं प्रचण्डं । बाला क [illegible] धातु कनकाचलधातुवलुद्ध
वपूतं वदूकनाथमहं नमामि ॥ हनतुकुलगणाधिपस्थानगणा
नयतु कुलसमयस्थापि पूर्ण तत्पूजकानां । पिबतुवटुकनाथः [illegible] लिनं

श्री २

निन्दकानां दिगन्तुसकलकामान्कौलिकानांगणेशः । धर्मजय यादि
लल्लोकसुखावहाय नष्टेत्तधर्म मिस्विलवड्रःखमूलं । आनादिवारि
ममस्त्राणलापमानि [illegible] पाः पतन्तु समयद्विषां जिनानां । याश्रुत
क्रमन्म [illegible] कावसनया नाजीभूयाः [illegible] कायाः [illegible] लाम कूप निल
याताः [illegible] ता धातुभू । उज्ज्वालामिनित [illegible] लया [illegible] सतोसत्य
या स्फाद्यदाश्रि पुरुकुलकुल [illegible] कौ [illegible] ताः । दनता खिल
देवनागजभूताः [illegible] पार्ह नवा [illegible] वदू [illegible] पिन्या वकाल
काप्यवटकाः । [illegible] भूतस्था [illegible] भूताः । पिशाचाग्रहास्क
न्दाः स्यूः कुलपूजकस्यविवतः धान समं प्रकुर्वन् ॥ सर्व चतुर्वाङ्क
मवपिनगावदाघ्रवडानिनीप्रीमाय [illegible] द्वन्द्वाः प्रमार्ग
हिर्च्च । [illegible] यदि दर्शनं [illegible] यो मा [illegible]

यिकीलिकाध्ययदिव्यत्याभ्रजयः सर्व्वदा ॥ शिवमस्तु सर्व्वजगतः परहि-
तनिरता भवन्तु भूतगणाः। दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्व्वत्र जनः सूखी भव-
तु ॥ नन्दन्तु कूलयोगिन्यानन्दन्तु कूलपूत्रकाः। नन्दन्तु चक्रकूलाचार्या-
श्चचान्याकूलपालकाः। नन्दन्तु साधकाः सर्व्वे विनश्यन्तु विदूषकाः।
अवस्था [illegible] मकवामस्तु प्रसन्नास्तु [illegible] सदा ॥ अनेकाका [illegible] यः कू-
लयोगिनीनामकव [illegible] हिः कौलिकचक्रसंस्थाः। निपीयमाननयना-
नन्दनयीनाः प्रसन्नावरदा भवन्तु ॥ [illegible] पापधियः स्वदूषणतनाम
निन्दकाः पूजनदर्शनविमर्द्दनष्टहृदयास्तु [illegible] साधकाः। द-
ष्टाचक्रमपूर्व्वमग्रसमयः कौलिकादूषकाः स्तम्भयान्तु विनाशमत्र
समयश्री [illegible] स्या [illegible] या ॥ साधकानां [illegible] नः सदा [illegible] दूषकाः।
डाकिनीनां मूखमान्तु [illegible] ॥ ॥ [illegible]

॥ ॥ वर्गाद्यैमरुधनसीवियदग्नुपपञ्चदसः॥ नादविन्दुकला
पतनिः पदाद्यं कूलाम्बिका ॥ १ ॥ अनन्ताख्य पवनं भि-
खीमसमन्विसंपूटं ॥ मायाहिनन्नादविन्दुकलाक्रान्तन्निर-
र्दनं ॥ २ ॥ शिवशक्तिसमायूक्त कालिकावामपार्श्वयू-
क ॥ दहनामायया सार्द्धं विन्दुयुक्तमलं ह्रकं ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं ति
महामन्त्रानहृदयं [illegible] का ॥ अग्निमकूटाक्षुमहा
प्रचण्डाय कूटाय स्वाहा इति कण्ठिमूखाच्छूवरी ॥ ॥

अथ स्नानविधिः ॥ मालमालवनविधिर्थे [illegible] लीबावयाय ॥ नाचावरणं वन ॥ दनकका
स्कामावमधजपनव ॥ ॐ वमनक[illegible]यव्रायदूं ॥ वावाय ॥ क्लीं कामदेवायसर्व
जनप्रियाय नमः ॥ स्नान[illegible]याय यातल्लन लोलाम मिमाव नाचाव धान १२ स्ना
नमियमन्त्र निकुंचिय धमनाल ॥ ॐ ऊर्द्ध्वकेलि विनूया किमसि [illegible]
जिनि । किष्व दविमि [illegible] वामृ [illegible] स्कृपनाजित ॥ ॥ प्राणायाम [illegible] दि
कनवतङ्न्यासयाय ॥ नवकत्रिका । नथा [illegible] थेतीर्थ जावाहनयाय ॥ अंकु
शमुद्रान ॥ [illegible] वयम नत्रवति ॥ ॥ संक[illegible]याय ॥ जुद्धयादि ॥ श्रीमहा
त्रिपुरसुन्दर्याः पीयर्थ स्नानमहं करिष्ये ॥ मूलमन्त्रेण जपनवधान
१० ॥ मूलमन्त्र [illegible] यावत स्नानयाय ॥ मूलमन्त्रेण कलशमुद्रा [illegible] ली
खनस्थं पानर्थवलि [illegible] सहायमूलमन्त्र सम्योहाजा [illegible] कामनन्नेमान ॥ मूल
स्वाहा । श्री महात्रिपुरसुन्दर्या [illegible] ईः स्वाहा ॥ तर्पनियाय स्थीयाव ॥ ॐ

जययाय रुद्रका ॥ [illegible] निस्नानविधिः ॥ ॥ विरूपि धवर्ण ॥ [illegible] विन्यासः ॥ ॐ ह
स्मधानुलक्ष्मी पिपली [illegible] नमीकुन्दः कालाग्नि रुद्रादबकालमधाव
[illegible] विनियोगः ॥ ॥ पिपलामध्ययनमः ॥ शिरसि ॥ जगतीछन्दसेन
मः ॥ [illegible] ॥ कालाग्निरुद्रादेवतायनमः ॥ हृदि ॥ [illegible] विनि
योगः ॥ [illegible] नमस्कारुयाय ॥ ॥ [illegible] ॥ हां अंगुष्ठान
मः ॥ ह्रीं तर्ज्जनीभ्यां स्वाहा ॥ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट् ॥ हैं अनामिकाभ्यां
हुं ॥ ह्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट् ॥ ह्रः अस्त्राय फट् ॥ एवमङ्गन्यासः ॥ ॥ विरू
[illegible]
[illegible] ॥ हां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॥ [illegible] १० ॥ मान
[illegible] ॥ सद्योजातायनमः
[illegible] ॥ वामदेवायनमः ॥ [illegible] ॥ अघोरायनमः ॥ हृदि ॥ तत्पुरुषायन

स२